

कक्षा -12 हिंदी

(साहित्यिक एवं सामान्य)

गद्यांश पहचानने की ट्रिक



1-राष्ट्र का स्वरूप~ वासुदेवशरण अग्रवाल

यदि गद्यांश में निम्नलिखित शब्दावली दिखाई पड़े तो समझ जाइए यह गद्यांश चैप्टर **राष्ट्र का स्वरूप - वासुदेव शरण अग्रवाल** द्वारा रचित है। जैसे -

राष्ट्र, धरती, भूमि, वसुंधरा, माता भूमि, मातृभूमि, धरती माता, पृथ्वी, जन, संस्कृति, राष्ट्रीय जन, राष्ट्र संवर्धन, राष्ट्रीयता, साहित्य कला, नृत्य गीत।

2-रॉबर्ट नर्सिंग होम में - कन्हैयालाल मिश्र

'प्रभाकर'

यदि गद्यांश में नीचे दी गई हुई शब्दावली प्रयोग हो तो समझ जाना कि यह गद्यांश **रॉबर्ट नर्सिंग होम में** पाठ से है, जैसे-
नशतर, हिटलर, मदर, मदर मागरेट, मदर टेरेसा, कामरूप का जादू, मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा है, बूढ़ी मुस्कानमयी प्रफुल्ल मदर।

3-अशोक के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी

यदि नीचे दी हुई शब्दावली गद्यांश में प्रयोग हो तो समझ जाना यह पाठ अशोक के फूल है, जैसे--

अशोक, अशोक का फूल, अशोक, कालिदास, गंधर्व,
संतानकामिनिया, मनोहर पुष्प, विक्रमादित्य, मानव जाति की दुर्गम
निर्मम धारा, जिजीविषा, आर्य हूण, कुषाण, शक, महामानवसमुद्र,
रवींद्रनाथ टैगोर, दुनिया बड़ी भुलककड़ है।

4-प्रगति के मानदंड- पंडित दीनदयाल उपाध्याय

निम्न शब्दावली प्रयोग हो तो समझ जाना प्रगति के मानदंड पाठ से
यह गद्यांश है-

यत पिंडे तथा ब्रह्मांडे, बलमुपास्य, आर्थिक, सामाजिक, समाज,
भरण-पोषण, जीविकोपार्जन,
समाज के विषय में बात हो,
भारतीय संस्कृति के साथ समाज शब्द जरूर मिलेगा।

5- भाषा और आधुनिकता - प्रो. जी सुंदर रेड्डी

जब नीचे दिए गए वाक्यांश शब्दावली प्रयोग हो तो भाषा और आधुनिकता पाठ लिखना है- जैसे =

भाषा की बात अवश्य होगी,
संस्कृति + भाषा की बात होगी।

नए शब्द को गढ़ना, आविष्कार करना,
नए मुहावरे, पंडितों की दिमागी कसरत, आदि।

6- हम और हमारा आदर्श – डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

नीचे दिए गए वाक्यांशों एवं शब्दावली का प्रयोग होगा तो समझ जाना यह अब्दुल कलाम जी वाला पाठ है-

जैसे-

अध्यात्म और समृद्धि का विरोध, युवा शक्ति, युवाओं से मिलना, महत्वाकांक्षा, विकसित भारत, जिम्मेदार नागरिक, समृद्धि और अध्यात्म, प्रकृति अधूरे मन से काम नहीं करती, संसार ऊर्जा का रूप है, भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना, आदि।

निंदा रस - हरिशंकर परसाई

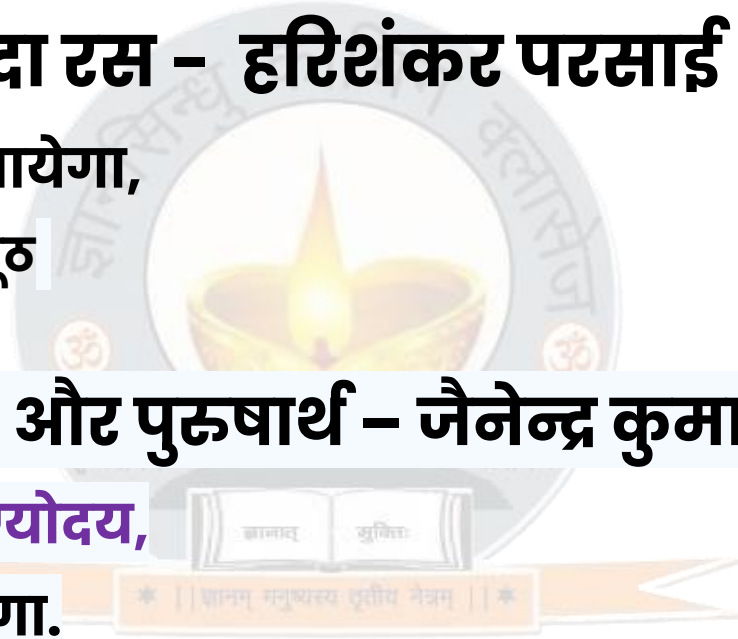
निंदा शब्द बार बार आयेगा,
धृतराष्ट्र, भीम, मित्र, झूठ

भाग्य और पुरुषार्थ - जैनेन्द्र कुमार

भाग्य , पुरुषार्थ, भाग्योदय,

- शब्द बार बार आयेगा.

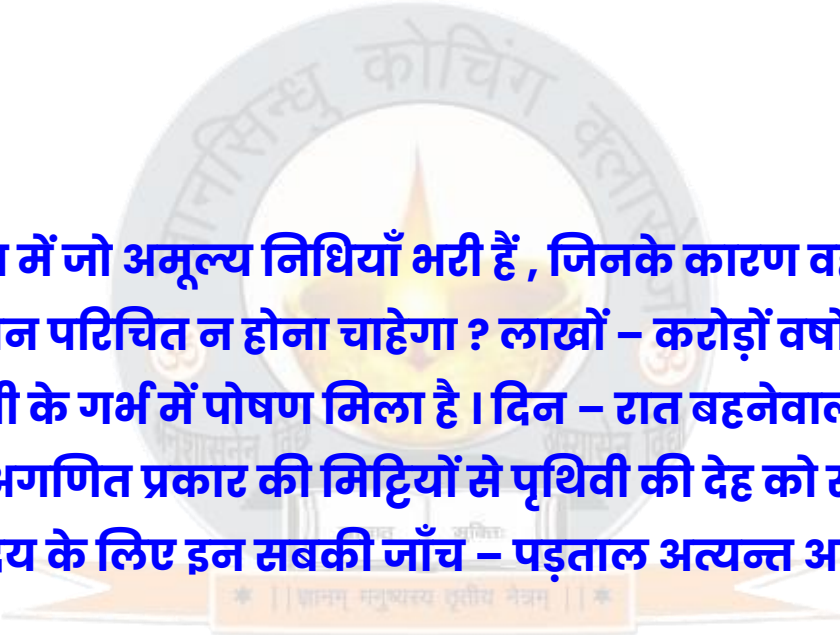
इच्छाएँ नाना हैं, दुःख भगवान का वरदान.



अब पहचानो??????

हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र मानव होना चाहिए जो ' यत् पिण्डे तद्ब्रह्मांडे ' के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है । भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन हैं, साध्य नहीं । जिस व्यवस्था में भिन्नरुचिलोक का विचार केवल एक औसत मानव से अथवा शरीर-मन - बुद्धि - आत्मायुक्त अनेक एषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थचतुष्टयशील , पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाय , वह अधूरी है ।

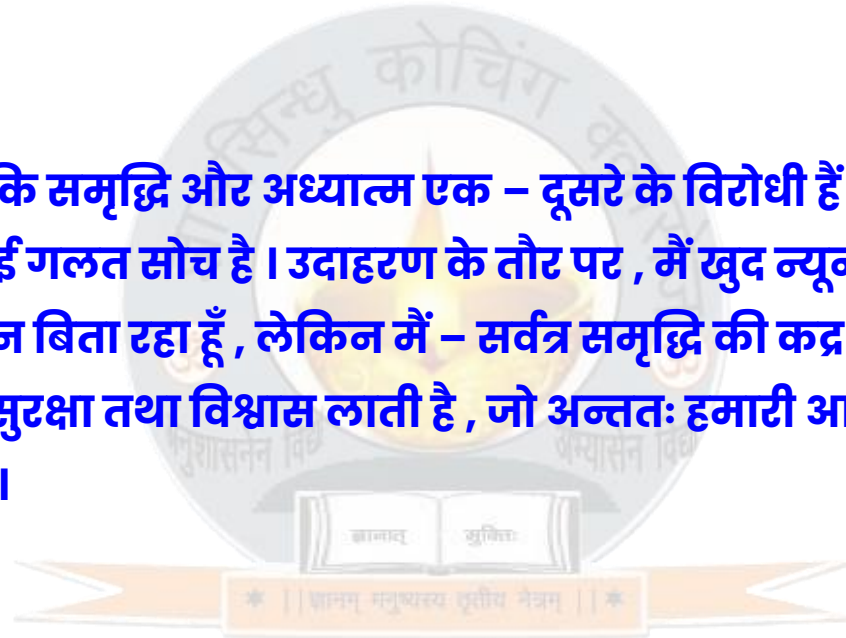
* || ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीयं नेत्रम् || *

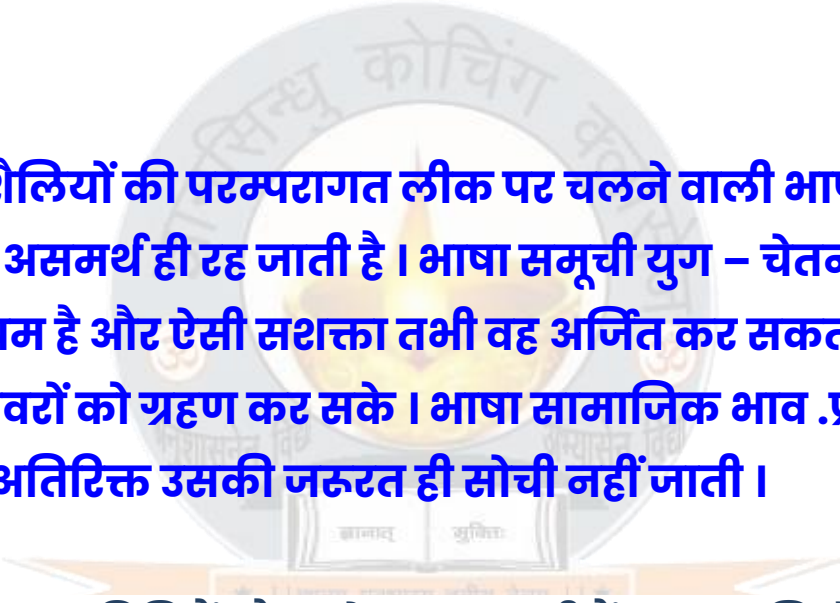


धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं , जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है उससे कौन परिचित न होना चाहेगा ? लाखों – करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथिवी के गर्भ में पोषण मिला है । दिन – रात बहनेवाली नदियों ने पहाड़ों को पीस – पीसकर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथिवी की देह को सजाया है । हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच – पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है ।

* || ज्ञानम् मनुष्यास्य तृतीयं नेत्रम् || *

मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक – दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं – सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अन्ततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं।





पुरानी रीतियों और शैलियों की परम्परागत लीक पर चलने वाली भाषा भी जन चेतना को गति देने में प्रायः असमर्थ ही रह जाती है। भाषा समूची युग – चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और ऐसी सशक्ता तभी वह अर्जित कर सकती है जब वह अपने युगानुकूल सही मुहावरों को ग्रहण कर सके। भाषा सामाजिक भाव .प्रकटीकरण की सुबोधता के लिए ही अतिरिक्त उसकी जरूरत ही सोची नहीं जाती।

इच्छाएँ नाना हैं और नाना विधि हैं और उसे प्रवृत्त रखती हैं। उस प्रवृत्ति से वह रह-रहकर थक जाता है और निवृत्ति चाहता है। यह प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका

मारता है। इस संसार को अभी राग-भाव से वह चाहता है कि अगले क्षण उतने ही विराग-भाव से वह उसका विनाश चाहता है। पर राग-द्वेष की वासनाओं से अन्त में झुंझलाहट और छटपटाहट ही उसे हाथ आती है। ऐसी अवस्था में उसका सच्चा भाग्योदय कहलाएगा अगर वह नत-नम्र होकर भाग्य को सिर आँखों लेगा और प्राप्त कर्तव्य में ही अपने पुरुषार्थ की इति मानेगा।

